Need to redress the grievances of Mentha industry in Uttar Pradesh ? laid

डॉ. संघमित्रा मौर्य (बदायूं): मैं अपने संसदीय क्षेत्र बदांयू व उत्तर प्रदेश के 8-9 जिलो के मेंथा व्यापारियों की परेशानी से अवगत कराना चाहती हूं। मेंथा उद्योग कृषि आधारित निर्यातोन्मुखी उद्योग है। सम्पूर्ण भारतवर्ष के 85% मेंथा की फसल उत्तर प्रदेश के 8-9 जिलों में विशेष रूप से होती है। इसमें लाखों किसान, ग्रामीण मजदूर, MSME के अंतर्गत आने वाली 500 से अधिक निर्माता तथा निर्यातक इकाइयां, अनेक स्किल्ड एवं अन-स्किल्ड कर्मचारी कार्यरत हैं। मैंथा के 75% - 80% फिनिश्ड प्रोडक्ट्स एक्सपोर्ट होते हैं, शेष 25 % उत्पाद भारतीय घरेलू बाजार में बिकते हैं। इसका उत्तर प्रदेश में कुल उत्पादन करीब 6000/- करोड़ रूपए वार्षिक का है, जिसमें निर्यात के द्वारा लगभग 4000/- करोड़ रूपए की विदेशी मुद्रा प्रदेश को प्रति वर्ष प्राप्त होती है, जिससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था में सहयोग मिलता है। वर्तमान में यह इंडस्ट्री सिंथेटिक मेंथॉल के प्रकोप से जूझ रही है, जो विदेशों द्वारा आयात किया जा रहा है और नेचुरल मेंथॉल का कोड यूज करके कंज्यूमर कंपनियां इसका उपयोग कर रही है। सरकार से अनुरोध है कि सिंथेटिक मेंथॉल का एचएसएन कोड अलग किया जाए और नेचुरल मेंथॉल का कोड अलग किया जाए तथा सिंथेटिक मेंथॉल के इंपोर्ट पर प्रतिबंध लगाया जाए और साथ ही नेचुरल मेंथॉल इंडस्ट्री को सहायता दी जाए, जिससे यह फसल बचाई जा सके और लाखों किसानों के रोजगार को तबाह होने से रोका जा सके।